

अनुनासिकता और अनुस्वार

अनुनासिकता : सभी स्वर अनुनासिक हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में हवा मुखविवर और नासिका विवर दोनों विवरों से निकलती है। लिखते समय अनुनासिकता को दो प्रकार से लिखा जाता है- (i) चन्द्रबिंदु (¨) द्वारा, (ii) बिंदु (´) द्वारा

(i) चन्द्रबिंदु का प्रयोग शिरोरेखा के ऊपर मात्रा न होने पर होता है; जैसे— धुआँ, गाँव, साँप, नदियाँ, मालाएँ, जाऊँगा, जहाँ, कहाँ, हूँ।

(ii) बिंदु का प्रयोग शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा होने पर होता है; जैसे— सिंचाई, ईंट, नींद, मैं, हैं, चौकना, भौंह, बच्चों, पढ़ीं, क्योंकि में।

अनुस्वार - नासिक्य व्यंजन अर्द्धव्यंजन के रूप में वर्गीय व्यंजनों के साथ संयुक्त होने पर विकल्प में अनुस्वार का प्रयोग होता है। जैसे - गङ्गा-गंगा, चञ्चल-चंचल, दण्ड-दंड, नन्द- नंद, कम्पन - कंपन आदि।

रूप विचार

(शब्दों के रूप परिवर्तन)

तू कल वहाँ बड़ा कमरा अवश्य ले।

तुझे कल वहाँ बड़े कमरे अवश्य लेने पड़ेंगे।

यहाँ दो वाक्य दिये गये हैं। पहले वाक्य में सात पद हैं। ये सातों पद मूल रूप में हैं। दूसरे वाक्य में उनमें से चार पद मूल रूप में नहीं रहे। उनमें परिवर्तन या विकार हो गया है, जबकि तीन में परिवर्तन या विकार नहीं हुआ है।

मूल रूप

तू

बड़ा

परिवर्तित रूप

तू+ को = तुझे

बड़ा+ए = बड़े



कमरा
ले

कमरा + ए = कमरे
ले + ने = लेने (पढ़ेंगे)

मूल रूप

अपरिवर्तित रूप

कल

कल

वहाँ

वहाँ

अवश्य

अवश्य

वाक्य में आने पर शब्दों के रूप बदलते जाते हैं। अतएव शब्द के दो रूप हैं —

१ - मूल रूप या अविकारी २ - विकारी रूप या परिवर्तित रूप।

शब्दों का रूप-परिवर्तन लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल के कारण हो जाता है, जैसे —

★ लिंग के कारण - लड़का - लड़की

अच्छा - अच्छी

मेरा - मेरी

पढ़ता - पढ़ती

★ वचन के कारण - लड़का - लड़के

अच्छा - अच्छे

मेरा - मेरे

पढ़ता - पढ़ते

★ पुरुष के कारण - मैं - हम

तू - तुम / आप

वह - वे

यह - ये

★ कारक के कारण - कमरा - कमरे में

छोटा लड़का - छोटे लड़के को

वह - उसने, उसे

वे - उन्होंने, उन्हें

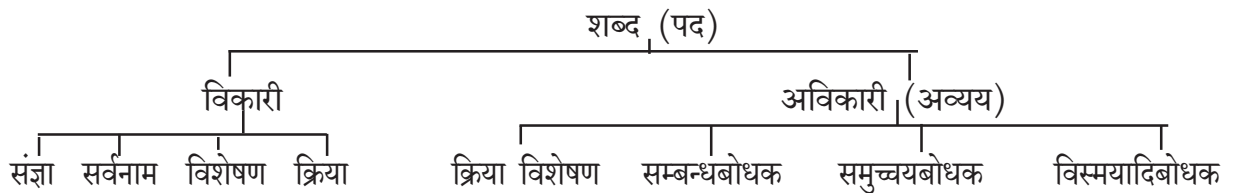
★ काल के कारण— जाता है - गया - जाएगा

पढ़ता हूँ - पढ़ा - पढ़ूँगा

परिवर्तन या विकार चार प्रकार के शब्दों में होता है। इसलिए विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।

अविकारी शब्दों में कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता। ये शब्द अपने मूल रूप में ही वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं। इन्हें ‘अव्यय’ कहते हैं।

ये भी चार प्रकार के होते हैं। क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक। इस विभाजन को निम्न सारणी द्वारा समझा जा सकता है।



बूढ़ा हाथी आप ही धीरे-धीरे जा रहा था।

ऊपर के वाक्य में प्रयुक्त पद निम्नलिखित प्रकार के हैं —

विकारी १. संज्ञा : हाथी

२. सर्वनाम : आप

३. विशेषण : बूढ़ा

४. क्रिया : जा रहा था।

अविकारी ५. अव्यय : धीरे-धीरे, ही